राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यभाग
(ROLE OF HISTORY FOR NATIONAL INTEGRATION)

डॉ. सम्पूर्णानन्द का मत है कि राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए शिक्षा अति महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। अतः विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण

Scanned with CamScanner

स्थान प्रदान किया जाय, क्योंकि इसके अध्यापन द्वारा उन विचारों, भावनाओं, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं का विकास किया जा सकता है जो राष्ट्रीय एकता के विकास के आधार पर काम करते हैं। संक्षेप में, राष्ट्रीय एकता के मूलाधार निम्नलिखित हैं—

(1) छात्रों में यह भावना विकसित की जाय कि भारत एक राष्ट्र है।

(2) यह भावना विकसित की जाय कि भारत की विविधता में एकता निहित है।

(3) देश की संस्कृति के लिए प्रेम उत्पन्न किया जाय।

(4) छात्रों को इस तथ्य से अवगत कराया जाय कि भारत ने सदैव दूसरी संस्कृतियों को स्वयं आत्मसात् करने के लिए सफल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि उसने सदैव उनका भारतीयकरण किया है।

(5) देश के विभिन्न भागों की आर्थिक अन्योन्याश्रितता एवं समान समस्याओं से अवगत कराना।

(6) छात्रों में यह समझदारी विकसित करना कि देश की सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति भारत के सभी क्षेत्रों तथा लोगों के सहयोग पर निर्भर है।

(7) छात्रों में दूसरे लोगों, उनके विश्वासों, परम्पराओं आदि के लिए अन्दर की भावना का विकास करना।

(8) राष्ट्रीय हित के समक्ष व्यक्तिगत या स्थानीय या क्षेत्रीय हित को त्यागने की तत्परता।

उपर्युक्त विचारों, भावनाओं आदि के विकास के लिए भारतीय इतिहास का अध्यापन परम आवश्यक है। साथ ही यह 'भारतीयता' (Indianness) की भावना के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक कार्य कर सकता है। परन्तु इतिहास का अध्यापक उक्त कार्यों को तभी कर सकता है जब उसका शिक्षण वस्तुनिष्ठ ढंग से किया जायेगा। छात्रों के समक्ष घटनाओं का विवरण उचित ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे उनके मस्तिष्कों में सम्पूर्णता तथा उचित दृष्टिकोणों का निर्माण हो सके। इसके लिए शिक्षक को इतिहास का अध्यापन उदार एवं निष्पक्ष ढंग से करना होगा। इस प्रकार से किया गया अध्यापन छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन तथा अतीत की उपलब्धियों एवं निर्बलताओं का मूल्यांकन करने की शक्ति विकसित करेगा। यह उनमें सहिष्णुता, देश-प्रेम की भावना तथा पारस्परिक सम्बन्धों को समझने की भावना के विकास में भी सहायक होगा। साथ ही यह छात्रों को प्रचार तथा सम्मतियों में से तथ्यों को छाँटने के लिए भी समर्थ बनायेगा। अतः इतिहास-शिक्षण को वस्तुनिष्ठ बनाना आवश्यक है। साथ ही सांस्कृतिक संश्लेषण पर बल दिया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में इसका शिक्षण करते समय उन तत्त्वों पर अधिक बल दिया जाय जिन्होंने विभिन्न संस्कृतियों को मिलाने में सहयोग दिया है।

राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यक्रम
(PROGRAMME OF HISTORY FOR NATIONAL INTEGRATION)

राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए इतिहास के कार्यक्रम में निम्नलिखित तथ्यों पर बल दिया जा सकता है—

प्राथमिक स्तर (Primary Stage)

(1) कार्यक्रम में लोक-गीतों एवं राष्ट्र-भक्तों की कहानियाँ। परन्तु कहानियाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न व्यक्तियों की होनी चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि इसका प्रतिपादन ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार किया जाय।

(2) सामाजिक जीवन की स्थितियों का सरलतम ज्ञान कराया जाय।

(3) स्थानीय ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कराया जाय और यह भी स्पष्ट किया जाय कि राष्ट्रीय इतिहास के विकास में इस स्थान के लोगों का क्या योगदान है।

माध्यमिक स्तर (Secondary Stage)

(1) विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान।

(2) भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाए। साथ ही भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं एवं उसकी अन्य संस्कृतियों के लिए दी गई देनों का विवेचन। उनको यह स्पष्टतः बताया जाय कि भारतीय संस्कृति आज जिस रूप में है, वह विभिन्न जातियों एवं समुदायों के लोगों के परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का ही परिणाम है।

विश्वविद्यालय स्तर (University Stage)

(1) भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं, साहित्य, संस्कृतियों आदि का तुलनात्मक अध्ययन।

(2) विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं शैक्षिक समस्याओं का व्यावहारिक ज्ञान।

छात्रों में इतिहास के पाठों द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने के लिए उनका अध्यापन किस ढंग से किया जाय, इसको स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप नीचे एक पाठ की व्याख्या की जा रही है—

प्रकरण—भारतीय इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

(अ) अवबोध (Understanding)—इस पाठ के अध्यापन द्वारा छात्रों में इन बातों की समझदारी विकसित की जायेगी—

Scanned with CamScanner

(i) भारत एक भौगोलिक इकाई है जिसने विभिन्न प्रकार से देश के निवासियों के जीवन को प्रभावित किया है।

(ii) छात्रों को इस तथ्य से अवगत कराना कि भारतवासी विभिन्न प्रजातियों के वंशज हैं।

(iii) इस बात की जानकारी कराना कि भारत में भाषा, धर्म तथा सामाजिक परम्पराओं की विभिन्नता होते हुए भी एक मूलभूत एकता है।

(iv) देश की भौगोलिक एकता ने समान संस्कृति के विभिन्न पक्षों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

(ब) विषय-वस्तु तथा शिक्षण-बिन्दु (Content and Teaching Hints)—शिक्षक प्रस्तुतीकरण के प्रत्येक सोपान पर ऐतिहासिक तथ्यों का भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ समन्वय स्थापित करेगा।

(i) शिक्षक जब देश के पर्वतों तथा नदियों के विषय में बतायेगा तब उसको मानचित्र में उनकी स्थिति प्रदर्शित करनी होगी। साथ ही वह इस तथ्य पर बल देगा कि देश के विभिन्न भागों के लोग इन पर्वतों एवं नदियों को पवित्र मानते थे। इसके प्रमाण के लिए वह उनके समक्ष निम्नलिखित श्लोकों को प्रस्तुत करेगा—

(क) गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

(ख) महेन्द्रो मलयः साध्यः शक्ति मान्धक्ष पर्वतः।।
विन्ध्यक्ष पारियान्त्रश्च सप्नते कुल पर्वतः।।

(ii) इसके उपरान्त शिक्षक देश की जलवायु तथा वनस्पति के विभाजन के विषय में बतायेगा। वह लोगों की आदतों की विभिन्नता, भोजन, वेशभूषा, भाषा आदि का देश के विभिन्न भागों की भौगोलिक विशेषताओं के साथ समन्वय स्थापित करेगा।

(iii) वह इस तथ्य को भी स्पष्ट करेगा कि भौगोलिक विभिन्नताओं के कारण विभिन्न भाषाओं, कलाओं आदि को जन्म मिला।

(iv) शिक्षक इस तथ्य को भी समझायेगा कि भारत की भौगोलिक इकाई की पूर्णता ने मातृभूमि की इस पवित्र धारणा—'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' को जन्म दिया।

(v) छात्रों को इस तथ्य से अवगत करायेगा कि हमारे विभिन्न धर्मों के नेताओं तथा उनके प्रर्वतकों ने सम्भवतः इस एकता की अनुभूति कर ली थी। इसी कारण उन्होंने देश के विभिन्न भागों में अपने केन्द्र स्थापित करने का प्रयास किया था।

(स) अन्य क्रियाएँ (Other Activities)—(i) छात्रों से भारत का मानचित्र बनवाया जायेगा जिसमें सभी धर्मों के तीर्थस्थान प्रदर्शित किये जायेंगे।

Scanned with CamScanner